स्वामी रामतीर्थ की कहानियाँ

स्वामी रामतीर्थ की कथाएँ

सन्तराम वत्स्य

पुस्तकायन

मूल्य : ८.००

प्रकाशक : **पुस्तकायन,** २/४२४०-ए, अंसारी रोड, नई दिल्ली-२ /
संस्करण : १९८९ / मुद्रक : अजय प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

दो शब्द

अन्य संत-महात्माओं की तरह स्वामी रामतीर्थ भी अपने प्रवचनों और व्याख्यानों में दृष्टान्त कथाओं का उपयोग करते थे।

वेदान्त जैसा रहस्यमय विषय सर्वसाधारण जनों को बोधगम्य शैली में समझाने के लिए यह एक तरह से आवश्यक भी है। उपनिषदों में भी अनेक कथाएँ हैं जो विषय का प्रतिपादन करने में सहायक होती हैं और कथातत्त्व के समावेश से रोचकता भी आती है।

संत-महात्माओं के श्रीमुख से निकली हुई ये कथाएँ अपना विशेष महत्त्व रखती हैं। इन कथाओं में उनके अपने ज्ञान और अनुभव का पुट होने से, इनमें विशेष चमत्कार उत्पन्न हो जाता है।

ज्ञान की गम्भीर बातें भी इन कथाओं के माध्यम से सहज रूप से समझ में आ जाती हैं।

हमारे यहाँ श्रुत ज्ञान की परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है। हमारा पुराण-साहित्य इसका पुष्ट प्रमाण है। कथा के माध्यम से सभी श्रोता अपनी-अपनी ग्रहण-शक्ति—पात्रता के अनुसार धर्म के तत्त्वों को समझते थे। ठीक वैसे ही, जैसे तटवर्ती लोग नदी-प्रवाह से अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनके जल का उपयोग करते हैं।

भारत के पुनरुत्थान-काल में, विश्व को भारत की ज्ञान-सम्पदा से परिचित करवानेवालों में स्वामी विवेकानन्द और

स्वामी रामतीर्थ का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। वे समकालीन तो थे ही, एक-दूसरे से मिले भी थे।

स्वामी रामतीर्थ का जीवन वेदान्त का दर्पण था। उनमें 'सोऽहम्' की मस्ती, अद्वैत की एकमेव अद्वितीय ब्रह्मसत्ता का साक्षात्कार और पिण्ड में ब्रह्माण्ड की अभिव्यक्ति हुई थी।

इन कथाओं के मूल स्वरूप को सुरक्षित रखते हुए भी पुनर्कथन करते समय कुछ विस्तार किया गया है। सन्दर्भ से अलग करके इन कथाओं को देने का उद्देश्य यह है कि सुकुमार-मति पाठक इनसे लाभान्वित हो सकें।

—सन्तराम वत्स्य

कहानी-क्रम

१.	निन्यानवे का फेर	७
२.	अहंकार ही मौत है	११
३.	मैं और मेरा	१५
४.	मेरा सब-कुछ वही है	१७
५.	जगत में जगदीश : प्रपंच में परमेश्वर	१९
६.	मन की भूख	२१
७.	नेकनीयती से बरकत	२३
८.	गड़ा हुआ धन	२६
९.	दूसरों के लिए	३०
१०.	भगवान् की पहचान	३१
११.	मोर्चा फतह	४०
१२.	मन के जीते जीत	४२
१३.	देश के नाम पर धब्बा	४४
१४.	दयालु अब्राहम लिंकन	४५
१५.	देश की आन पर	४७
१६.	देश के सम्मान में अपना मान	४९
१७.	छाया की माया	५१
१८.	आत्मविश्वास	५२
१९.	अपनी-अपनी करनी	५४

निन्यानवे का फेर

एक मेहनती पति-पत्नी की जोड़ी थी। दोनों मिलकर मेहनत-मजदूरी करते और जो कमाते उसी में संतुष्ट रहते।

छोटा-सा उनका घर था, लिपा-पुता और साफ-सुथरा। वे अपनी कमाई का रूखा-सूखा खाकर ही प्रसन्न थे। उन्हें पराई चुपड़ी से मतलब नहीं था। उनकी बड़ी-बड़ी इच्छाएँ नहीं थीं।

उनके पड़ोस में ही एक सेठ रहते थे। उनका बहुत बड़ा भवन था। नौकर-चाकर थे। घोड़ा-गाड़ी, गाय-भैंस, धन-सम्पत्ति सभी कुछ उनके पास था। वे नगर के नामी सेठ थे और उनका व्यापार खूब फैला हुआ था।

पर सेठ जी को सुख-चैन नसीब नहीं था। हर घड़ी चिन्ता में डूबे रहते। कभी व्यापार में कम लाभ होने की चिन्ता तो कभी अपने नाम और बड़ाई की चिन्ता। कभी नगर-सेठ बनने की चिन्ता तो कभी राजा को प्रसन्न रखने की चिन्ता। तरह-तरह की चिन्ताएँ सेठ

को दिन-रात सतातीं। सब-कुछ था पर हँसी-खुशी नहीं थी, सुख-चैन नहीं था, मस्ती नहीं थी।

एक बार कोई महात्मा नगर-सेठ के घर पधारे। सेठ ने उनका खूब आदर-सत्कार किया। मान-सम्मान

से उन्हें प्रसन्न किया ।

फिर एक दिन सेठ ने अपने मन की बात महात्मा जी से कही । बोले, "महाराज ! ईश्वर का दिया सब-कुछ मेरे पास है, पर मन में शान्ति नहीं है ।"

महात्मा ने समझाया, "सेठ जी, आप धन-सम्पत्ति और नाम-बड़ाई में शान्ति खोज रहे हैं । वहाँ आपको शान्ति मिलेगी नहीं, क्योंकि वहाँ है नहीं । आपकी इच्छाएँ, तृष्णाएँ ही अशान्ति को जन्म देती हैं । जब तक इच्छाएँ शान्त नहीं होंगी, तुम्हारा मन भी शान्त नहीं होगा । आप आग में घी डालकर उसे बुझाना चाहते हैं, पर वह और भड़क उठती है । चाह जाएगी तो चिन्ता मिटेगी । चिन्ता मिटेगी तो मस्ती आएगी । सेठ वह नहीं है, जिसके पास बहुत धन-सम्पत्ति है । सेठ वह है जिसको धन-सम्पत्ति की चाह नहीं रही । आपकी अशान्ति का कारण आपकी धन-सम्पत्ति है । आप धन के दास बन गए हैं और समझते हैं कि आप धन के स्वामी हैं । आप सोचते हैं कि मेरे पास इतनी सम्पत्ति तो है ही, और भविष्य में इतनी बढ़ोतरी और हो जाएगी । और जब मनचाही बढ़ोतरी हो जाती है तो मन उससे भी अधिक की इच्छा करने लगता है । इस तरह घोड़े और घास की दूरी हमेशा बनी रहती है । घोड़ा दौड़ता रहता है, दौड़ता रहता है, पर घास

का गट्ठर उसकी पहुँच में कभी नहीं आता।

"आप पड़ोसी को देखो। उसके पास धन-सम्पत्ति तो नाम को भी नहीं है। दोनों जने रोज कमाते हैं और रोज खाते हैं। पर कितने मस्त हैं, प्रसन्न हैं! वे अपनी गरीबी में मस्त हैं और आप अपनी अमीरी से परेशान हैं।"

महात्मा बोले, "सेठ जी, पैसा आदमी के जीवन में कैसे-कैसे रंग दिखाता है, यह देखना चाहते हो तो एक काम करो। एक थैली में निन्यानवे (९९) रुपए डालो और चुपचाप उसकी कोठरी में फेंक दो। फिर देखो क्या होता है।"

सेठ ने वैसा ही किया। दूसरे दिन उस गरीब के घर खाना नहीं बना।

महात्मा ने सेठ जी से कहा, "सेठ जी, जाकर पता लगाइए कि आज इनके घर में चूल्हा क्यों नहीं जला?"

सेठ ने निर्धन पड़ोसी से कुशल-मंगल पूछने के बाद जानना चाहा कि आज उन्होंने खाना क्यों नहीं पकाया?

तब उस व्यक्ति ने बताया कि वह प्रतिदिन जो कुछ कमाता था, उससे आटा-दाल-सब्जी खरीद लाता था और दिन मजे में कट रहे थे। न तो कुछ बचता था और न बचाने-जोड़ने की बात कभी मन में आई।

किन्तु आज सुबह-सुबह जब हम उठे तो क्या देखते हैं कि कोठरी में रुपयों से भरी एक छोटी थैली पड़ी है। थैली कौन फेंक गया, कुछ पता नहीं। थैली पाकर हमें खूब प्रसन्नता हुई। यह जानने की इच्छा हुई कि गिनकर देखें, कितने रुपए हैं। गिने तो एक कम सौ थे। अब हमने सोचा कि अगर किसी तरह हम एक रुपया बचा लें, तो पूरे सौ (१००) हो जाएँगे। बस, यही सोचकर आज खाना नहीं पकाया।"

स्वामी राम कहते हैं: लाभ से लोभ बढ़ता है। वे जब निन्यानवे रुपए पा जाते हैं, तो उन्हें सौ बनाना चाहते हैं और जब ९९००० जमा हो जाते हैं तो पूरे १,००,००० (एक लाख) बनाना चाहते हैं।

गोधन, गजधन, वाजिधन।
सबै रतन धन खान।
जब आवै सन्तोष धन,
सब धन धूरि समान॥

*

अहंकार ही मौत है

बहुत पुरानी बात है। एक ऐसा तपस्वी था, जिसके पास कई सिद्धियाँ थीं। इन सिद्धियों द्वारा वह

कई छोटे-मोटे चमत्कार दिखा सकता था। अपने चमत्कारों से वह लोगों को प्रभावित करता और अपना स्वार्थ सिद्ध करता। लोग तो चमत्कार को नमस्कार करते। वे कोई ऐसा-वैसा चमत्कार देखते तो समझते कि ये कोई बहुत बड़े महात्मा हैं।

इस चमत्कारी बाबा के पास एक सिद्धि यह थी कि वह बहुरूपिये की तरह अनेक रूप बना सकता था। वह एक ही तरह के अनेक रूप भी बना सकता था। एक-जैसे ये अनेक रूप किसी को भी धोखे में डाल सकते थे। इनमें कौन-सा असली है, और कौन-सा नकली है, यह पहचानना कठिन था।

जब उसकी मौत का दिन पास आया तो वह सोचने लगा कि अगर मैं यमदूतों को धोखा दे सकूँ तो लम्बे समय तक जीवित रह सकता हूँ।

सोचते-सोचते उसे एक उपाय सूझा। जिस दिन उसकी मौत होने वाली थी, उस दिन उसने अपने-जैसे कई रूप बनाकर खड़े कर दिये।

उसने सोचा कि जब यमदूत मेरे प्राण लेने आएँगे तो मेरे-जैसे हू-ब-हू कई मनुष्यों को देखकर चक्कर में पड़ जाएँगे कि इनमें से वह कौन-सा है, जिसे आज हम लेने आए हैं ?

और हुआ भी यही। यमदूतों ने एक ही घर में

बिल्कुल एक-जैसे कई लोगों को देखा तो चक्कर में पड़ गए। उन्हें तो एक के ही प्राण लेने थे। इन अनेकों में वह एक कौन-सा है, यह वह नहीं जान सके। जानने

का कोई उपाय भी नहीं था। आज तक उन्होंने एक ही जगह, एक ही समय ऐसे दो आदमी नहीं देखे थे, जिनमें ज़रा-भर भी अन्तर न हो।

यमदूत वापस अपने स्वामी यमराज के पास गए और अपनी कठिनाई कह सुनाई।

यमराज ने उस दूत को दूसरा काम बताया और उस बहुरूपिये का प्राण हरने के लिए स्वयं उसके घर पहुँचे।

यमराज ने देखा कि एक ही शक्ल-सूरत के अनेक लोग वहाँ मौजूद हैं। असली कौन है और नकली कौन, यह पता लगाना कठिन है। पर यमराज को धोखा देना, कोई आसान काम नहीं है।

यमराज उन सबके सामने खड़े होकर बोले, "बहुरूपिये ! मैं तुम्हें मान गया। सचमुच तुम बहुत चतुर हो। मैंने आज तक तुम्हारे-जैसा चतुर व्यक्ति नहीं देखा। तुम अपनी कला में सिद्धहस्त हो। फिर भी एक छोटी-सी भूल तुमसे भी हुई है। एक त्रुटि रह गई है। त्रुटि बहुत मामूली है, पर है त्रुटि ही।"

असली आदमी झट से बोल पड़ा, "कौन-सी त्रुटि रह गई है ?"

यमराज बोले, "बस, यही एक त्रुटि।" और यमराज ने त्रुटि पूछने वाले इस व्यक्ति के प्राण हर

लिये ।

अपने 'कर्त्ता' होने का अभिमान ही हमारी मौत का कारण है ।

गीता में भगवान् ने कहा, अहंकार से विमूढ़ आत्मा अपने को 'कर्ता' मानता है ।

*

मैं और मेरा

अकाल पड़ा हुआ था । भूख-प्यास से लोग मर रहे थे । यमदूतों का काम बहुत बढ़ गया था । उधर यमराज के मुख्य सचिव चित्रगुप्त भी बहुत व्यस्त थे ।

चित्रगुप्त के पास प्रत्येक व्यक्ति के अच्छे-बुरे कर्मों का गुप्त चित्र होता है । इसे आप भाग्य-लिपि भी कह सकते हैं । यमदूत जब मृत्युलोक से किसी मनुष्य के सूक्ष्म शरीर को लेकर यमलोक में पहुँचते हैं, तो चित्रगुप्त उसके शुभ और अशुभ कर्मों का चिट्ठा तैयार करते हैं और उसी के अनुसार प्राणी को पुरस्कार या दण्ड मिलता है ।

एक निर्धन स्त्री के सूक्ष्म शरीर को यमदूत ले गए। चित्रगुप्त ने उसका खाता देखा तो कोई पुण्य का

काम उन्हें नहीं मिला। मिला तो केवल यह कि उसने कभी एक भूखे भिखारी को एक गाजर खाने को दी थी। यह अच्छा काम था और इसका अच्छा फल उसे मिला भी।

वह गाजर वहाँ प्रकट हुई। यमराज ने उस स्त्री से कहा कि यह तुम्हारे दान की गाजर है। इसके सहारे तुम स्वर्ग जा सकोगी।

स्त्री ने दोनों हाथों से गाजर को पकड़ लिया। गाजर उसे स्वर्ग की ओर ले जाने वाली थी। वह धीरे-धीरे आकाश की ओर उठने लगी।

यमराज के दरबार की भीड़ में से जब न्याय की प्रतीक्षा में खड़े लोगों ने उस स्त्री को स्वर्ग जाते देखा तो सोचा कि इस पुण्यशीला का आँचल पकड़कर हम भी स्वर्ग चले चलें।

बस फिर क्या था! एक ने उसका आँचल पकड़ लिया और वह भी ऊपर उठने लगा। फिर देखा-देखी लोग ऊपर उठने वाले को पकड़ते गए। इस तरह एक बड़ी लम्बी पंक्ति बन गई।

ये सभी सूक्ष्म शरीरवाली आत्माएँ ऊपर की ओर उठने-उड़ने लगीं।

किसी को भार लगने का तो प्रश्न ही नहीं था। सूक्ष्म शरीर वायवी जो होता है।

ये सारे लोग ऊपर उठते-उठते स्वर्ग-द्वार के पास जा पहुँचे। तब गाजर को थामे हुए सबसे आगे वाली स्त्री ने पीछे की ओर मुड़कर देखा। बड़ी लम्बी पंक्ति थी। उस स्त्री के मन में भाव आया कि गाजर का दान मैंने किया और ये मुफ्त में स्वर्ग चले आ रहे हैं!

वह कड़ककर बोली, 'मेरी गाजर छोड़ दो!' और यह कहते ही उसके हाथ से गाजर छूट गई।

फिर क्या था! वह तेजी से नीचे की ओर गिरने लगी। उसका पल्ला पकड़कर जितने लोग स्वर्ग जा रहे थे, वे सारे भी गिर गए।

*

मेरा सब-कुछ वही है

एक फकीर था। उसके पास केवल एक कम्बल था। फकीर की नजर बचाकर चोर उसे उठा ले गया।

यह चोर भी पास-पड़ोस का भिखमंगा ही था। उसके साथी फटेहाल भिखमंगे ने जब उसके पास कम्बल देखा तो वह समझ गया कि यह चोरी का माल है। वह चुपके से गया और थाने में बता आया।

थाने का सिपाही आया और कम्बल-समेत भिखमंगे

को लेकर थाने में पहुँचा।

इतने में वह फकीर भी कम्बल की चोरी की रपट लिखाने थाने में पहुँचा। रपट में फकीर ने लिखवाया कि उसका तकिया, उसका गद्दा, उसका छाता, उसका कोट, उसकी लुंगी और उसका कम्बल चोरी चला गया है।

चोर तो वहीं बैठा था। फकीर के द्वारा इतनी ज्यादा चीजों के नाम सुनकर उसे बहुत क्रोध आया।

उसने थानेदार से कहा कि यह सरासर झूठ बोल रहा है। मैंने इसका सिर्फ एक कम्बल उठाया। उसने कम्बल को झाड़कर दिखा दिया। वह फिर बोला, "इस सड़े-गले कम्बल के साथ इसने दुनियाभर की चीजें लिखवा डालीं। झूठा कहीं का!"

फकीर ने झट से अपना कम्बल उठाया और जाने लगा।

थानेदार ने फकीर को रोका और झूठी रपट लिखवाने के लिए डाँटने लगा। फकीर ने कहा, "मेरी रपट झूठी नहीं है। यह कम्बल ही मेरे लिए सब-कुछ है। मैं कभी इसे तकिये की तरह, कभी गद्दे की तरह, कभी छाते की तरह, कभी कोट की तरह, कभी लुंगी की तरह और कभी कम्बल की तरह उपयोग करता हूँ।"

ईश्वर-प्रेमियों के लिए उनका ईश्वर ही सब-कुछ होता है।

*

जगत में जगदीश : प्रपंच में परमेश्वर

एक राजा शिकार खोजते-खोजते जंगल में भटक गया। दोपहर तक वह भूख-प्यास से व्याकुल हो गया। घोड़ा भी भाग-भागकर पसीने से तर-ब-तर था और प्यासा था।

रास्ता भूला राजा जंगल की सीमा पर पहुँचा तो उसे पास ही, गाँव के बाहर रहट चलता दिखाई दिया। प्यासा राजा रहट की ओर चल पड़ा।

जब रहट कुछ ही दूर रह गया तो रहट के चलने से चीं-पीं आदि तरह-तरह की आवाज़ों को सुनकर घोड़ा ठिठक गया।

राजा घोड़े के ठिठकने के कारण को समझकर घोड़े से उतर पड़ा।

घोड़े को बाँधकर वह रहट में जुते बैल को हाँक रहे किसान के पास गया और बोला, "मैं और मेरा घोड़ा—दोनों प्यासे हैं। पर इन चीं-पीं की आवाज़ों के

कारण घोड़ा ठिठक गया है। थोड़ी देर के लिए रहट को बन्द कर दो। हम पानी पी लें, तब चलाना।"

किसान ने वैसा ही किया। राजा घोड़े को लेकर आया तो देखा कि पानी निकलना बंद है।

उसने किसान से कहा, "यह पानी क्यों बन्द कर दिया ?"

"महाराज, आपने ही तो कहा था कि आवाज़ें बन्द कर दो।" किसान ने नम्रतापूर्वक कहा।

"मैंने आवाज़ें बन्द करने को कहा था, पानी बन्द करने को नहीं !" राजा ने कुछ रोब से कहा।

किसान फिर नम्रता से बोला, "महाराज ! आवाज़ें बन्द होंगी तो पानी निकलना भी बन्द हो जाएगा। अगर घोड़ा प्यासा है और आप उसे पानी पिलाकर उसकी प्यास बुझाना चाहते हैं तो उसे पकड़कर लाइये और पानी पिलाइये। यही एक-मात्र उपाय है। क्योंकि पानी तभी निकलेगा, जब रहट चलेगा। रहट चलेगा तो इसके दाँतों की आपस की रगड़ से आवाजें भी पैदा होंगी। इसलिए आवाज़ें बन्द करने का मतलब है पानी बन्द करना।"

बात राजा की समझ में आ गई। उसने घोड़े की लगाम पकड़ी और खींचकर पानी तक ले आया। इस बीच किसान ने रहट चलाना शुरू कर ही दिया था।

पहले घोड़े ने और फिर राजा ने जी-भर ठंडा पानी पिया।

*

'मन' की भूख

एक साधु के पास कुछ सिक्के थे। वह उन सिक्कों को सबसे गरीब व्यक्ति को देना चाहता था।

अगर कोई आदमी अपने को गरीब बताकर साधु से सिक्के माँगता तो वह कहते, "तुम सबसे गरीब नहीं हो। मैं ये सिक्के उसी को दूँगा जो सबसे गरीब होगा।"

फिर एक दिन की बात है—

देश का राजा हाथी पर सवार होकर कहीं जा रहा था। उसके साथ बाजे-गाजे, नौकर-चाकर, सैनिक और प्रजा के लोग भी चल रहे थे। सड़क के दोनों ओर लोगों की भीड़ थी। कुछ लोग राजा की ओर फूल फेंक रहे थे। कुछ राजा का जय-जयकार कर रहे थे।

राजा सजे हुए हाथी की पीठ पर रखे सुन्दर हौदे में शान से बैठा था। उसके सिर पर सुन्दर छत्र तना

हुआ था।

साधु भी सड़क के किनारे झोली में सिक्के लिये खड़ा था। जब हाथी साधु के सामने आया तो उसने मुट्ठी भर-भर सिक्के राजा की ओर फेंकने शुरू कर दिये।

कुछ सिक्के हौदे में गिरे, कुछ राजा को जाकर लगे और कुछ हाथी को लगकर ज़मीन पर आ गिरे।

राजा को साधु का यह व्यवहार बहुत अखरा।

राजा के संकेत पर साधु को सैनिकों ने पकड़ लिया।

दूसरे दिन जब दरबार लगा तो साधु को राजा के सामने प्रस्तुत किया गया।

राजा ने साधु से, उसके पिछले दिन के अभद्र व्यवहार के बारे में पूछा तो साधु ने कहा, "मैंने निश्चय किया था कि ये सिक्के उस आदमी को दूँगा, जो सबसे गरीब होगा।"

राजा ने कहा, "फिर तुमने सिक्के मेरी ओर क्यों फेंके ?"

साधु, "मैं समझता हूँ कि आप सबसे गरीब आदमी हैं।"

राजा, "एक राजा को सबसे गरीब समझने का क्या कारण है ?"

साधु, "कारण यह है कि आपके पास बहुत सम्पत्ति है। फिर भी आपकी सम्पत्ति जोड़ने की भूख नहीं मिटी। इसलिए मेरी नज़रों में तुम सबसे गरीब व्यक्ति हो।"

जिसका मन अभाव और असंतोष से ग्रस्त है, वही गरीब है।

*

नेकनीयती से बरकत

एक राजा शिकार का पीछा करता जंगल में दूर जा निकला। नौकर-चाकर सब पीछे रह गए। गर्मियों की दोपहरी में शिकार के पीछे भाग-भागकर राजा बहुत थक गया था। भूख-प्यास भी लगी हुई थी। पर खाने-पीने को पास कुछ न था।

अब शिकार का पीछा करना छोड़कर राजा ने जंगल से बाहर निकलने की राह पकड़ी। रास्ते में राजा ने एक सुन्दर बाग देखा। राजा बाग के भीतर चला गया। अन्दर जाने पर राजा को बागवान मिला।

राजा ने बागवान से कहा, "मैं प्यासा हूँ, मुझे

पानी पिलाने की कृपा करो।"

बागवान ने समझ लिया था कि यह कोई बड़े आदमी हैं। राजा का चेहरा-मोहरा रोबदार तो था ही। वह दो पके अनार तोड़ लाया। उसने उनके दाने निकाले और रस निचोड़कर घुड़सवार को पीने को दे दिया।

घुड़सवार ने अनार का स्वादिष्ट रस पिया तो जैसे प्यास और बढ़ गई। उसने बागवान से एक गिलास रस और लाने की प्रार्थना की।

इधर बागवान तो अनार तोड़ने और रस निकालने चला गया, उधर राजा के मन में विचार आया, 'कितना अच्छा बाग है और फल भी खूब लगे हैं। फलों में रस भी खूब है। इस बाग के मालिक को खूब आमदनी होगी। पता नहीं, हमारे कर्मचारी इससे 'कर' भी वसूलते हैं या नहीं। खैर, मैं वापस जाने पर पता करूँगा। अगर इस बाग के मालिक पर 'कर' नहीं लगा होगा तो अब अवश्य लग जाएगा।'

उधर माली ने फिर दो पके अनार तोड़े और दाने निकालकर रस निचोड़ने लगा। पर बड़े आश्चर्य की बात हुई कि पहली बार दो अनारों से गिलास भरकर रस निकल आया था, पर इस बार तो गिलास आधा भी नहीं हुआ।

उसने फिर दो अनार तोड़े, दाने निकाले और रस निकाला। गिलास फिर भी नहीं भरा।

उसने दो अनार और तोड़े और दाने निकालकर उनका रस भी निचोड़ा, पर तब भी गिलास पूरी तरह नहीं भरा।

बागवान को इस बार बहुत देर लग गई। जब वह रस लेकर घुड़सवार के पास पहुँचा तो घुड़सवार कुछ खीझ में बोला, "क्या बात है, पहली बार तो तुम झट रस ले आए थे, पर इस बार पहले से चौगुना समय लगा दिया?"

बागवान बोला, "श्रीमान् जी, आप ठीक कह रहे हैं। मैं भी हैरान हूँ कि पहली बार दो अनारों से गिलास-भर रस निकल आया था, अबकी बार मैंने छः अनारों का रस निकाला, पर गिलास फिर भी पूरा नहीं भरा।

"पता नहीं क्या जादू हुआ कि फलों में रस ही नहीं रहा! पहले एक अनार में से जितना रस निकला था, अबकी बार तीन अनारों में से भी उतना नहीं निकला।

"मैं समझता हूँ और मैंने बड़े-बूढ़ों को कहते भी सुना है कि राजा की नेकनीयती से प्रजा में नेकनीयती आती है और प्रजा फूलती-फलती है। जब राजा की

नीयत बिगड़ जाती है तो प्रजा में असन्तोष और अभाव फैलता है।

"इसी तरह की कुछ बात हुई होगी। प्रजा के प्रति दयालु और कृपाशील राजा का मन एकाएक पलट गया होगा, और तो कोई कारण मेरी समझ में नहीं आता।"

राजा को लगा जैसे किसी ने उसके मुँह पर तमाचा जड़ दिया हो। उसका लोभ पाप बनकर उसके सामने आ गया था।

*

गड़ा हुआ धन

एक कंजूस बनिया था। वह रूखा-सूखा खाता, मोटा पहनता और कभी आराम न करता। वह अपनी पत्नी और पुत्रों को भी ठीक से खाने-पहनने को न देता।

शहद की मक्खी की तरह उसने कौड़ी-कौड़ी बचाकर माया जोड़ी। अपने को और परिवार के लोगों को कष्ट में रखकर वह लखपति बन गया।

वह उस धन को व्यापार बढ़ाने में भी नहीं लगाता था।

एक बार बेटों ने मिलकर उससे कहा कि काम को बढ़ाने के लिए कुछ रुपए दीजिए।

पर वह साफ मुकर गया। बोला, "रुपए हैं ही कहाँ जो दूँ ?'

अब तो बनिये की चिन्ता और भी बढ़ गई। वह सोचने लगा, 'बेटे नौजवान हैं। अगर ये ताला तोड़कर धन निकाल लें तो मैं क्या करूँगा ? मेरी पत्नी भी इन्हीं का साथ देगी। फिर मैंने जो झूठ कह दिया कि मेरे पास कुछ नहीं है, उसी की आड़ लेकर यह कल को धन निकाल लेंगे और कह देंगे कि हमने नहीं निकाला। फिर मुझे ही झूठा बताएँगे कि आप तो कहते थे कि मेरे पास कुछ है ही नहीं।'

अब उसे रात-दिन चिन्ता लगी रहती कि उसके बेटे उसकी कमाई को बरबाद कर देंगे। उसे अपनी पत्नी पर भी भरोसा नहीं था। वह हर घड़ी चौकन्ना रहता। सन्दूक की चाबियाँ छिपाकर रखता और उसमें कुछ रखना होता तो औरों की नजर बचाकर रखता।

एक रात उसने चुपके से सन्दूक से धन निकाला और घर के एक अँधेरे कोने में गाड़ दिया।

बूढ़े ने अपनी समझ के अनुसार यह काम बड़ी चतुराई से किया था। पर बेटों को बाप के इस काम की भिनक मिल ही गई।

धन को धरती में गाड़कर बूढ़ा निश्चिन्त तो हो गया, फिर भी वह सावधान था और उस कोने की जमीन को देखता रहता था कि कुछ गड़बड़ तो नहीं है ?

और एक दिन···

बेटों ने मिलकर वह गड़ा धन निकाल लिया और उसकी जगह पत्थर रख दिये।

बूढ़े ने उस अँधेरी कोठरी के कोने की ज़मीन को पैर से टटोलकर देखा। उसे लगा कि मामला कुछ गड़बड़ है। फिर उसने तरह-तरह के काम बताकर घर के सभी लोगों को इधर-उधर भेज दिया।

उस कोने को खोदा तो उसका माथा ठनका। पूरा खोदा तो धन की जगह पत्थर मिले।

बूढ़ा बेहोश होकर गिर पड़ा। कुछ देर बाद जब होश आया तो वह समझ गया कि चोर बाहर का नहीं, घर का ही है।

शाम को जब घर के सभी लोग इकट्ठे हुए तो बूढ़े ने पूछा, "सच-सच बताओ, यह किसकी करतूत है?"

बेटे बोले, "सच तो हमारे बाप ने कभी नहीं कहा, फिर हमें ही क्या ज़रूरत पड़ी है जो सच बोलें?"

बूढ़ा मारे ग़म के रोने लगा। तब बेटों ने कहा, "पिताजी! आप तो कहते थे कि मेरे पास कुछ है ही नहीं। फिर रोते क्यों हैं? अगर मान भी लें कि आपने धन गाड़कर रखा था, तो वह आपके किस काम का था? आप उसे न अपने ऊपर खर्च करते थे और न

घर के लोगों पर। ऐसा धन किस काम का ! उस धन में और पत्थरों में अन्तर ही क्या है, जो किसी काम न आए !"

*

दूसरों के लिए

एक बूढ़ा आदमी सड़क के किनारे आम का पेड़ लगा रहा था।

एक राह-चलते युवक ने पूछा, "बाबा ! यह पेड़ क्यों लगा रहे हो ? यह तुम्हारे किस काम आएगा ? जब तक यह फल देने लगेगा, तब तक आप शायद इस दुनिया में नहीं होंगे। फिर बुढ़ापे में क्यों बेकार मेहनत करते हो ?"

बूढ़े ने सिर उठाकर युवक की ओर देखा। उसके होंठों पर हल्की-सी मुस्कान थी। बूढ़ा बोला, "मैंने बचपन में और बाद में भी जिन पेड़ों के आम खाए, वे मेरे लगाए हुए नहीं थे। मैंने दूसरों के लगाए पेड़ों के फल खाए। क्या यह मेरे ऊपर उनका ऋण नहीं है ? यह जो बिना लिखा-पढ़ी किये ऋण मिला, उसे

उतारने का यही उपाय है कि मैं नये पेड़ लगाऊँ और उनके फल दूसरे खाएँ।"

× × ×

इसी प्रकार संसार का काम चलता है। आपस का यह लेन-देन ही धर्म का मूल है। यही गीता का यज्ञ है, निष्काम कर्म है—फल की इच्छा छोड़कर, केवल कर्त्तव्य-बुद्धि से किया गया कर्म है।

*

भगवान् की पहचान

एक थे काज़ी जी। खूब पढ़े-लिखे थे। पर उनका ज्ञान केवल किताबी था। उन्हें अनुभूति या प्रतीति कुछ नहीं थी। बस, तोता-रटंत जैसा उनका ज्ञान केवल ज़बानी जमा-खर्च था। करनी के बगैर कथनी ऐसी ही होती है। ऐसों के लिए ही कबीर ने कहा था :

मैं कहता आँखों की देखी।
तू कहता कागद की लेखी॥

ये कोरे किताबी ज्ञान वाले ही हैं जो एक-दूसरे का सिर फोड़ते फिरते हैं। अपने ज्ञान के अभिमान में चूर ये लोग दूसरों को कुछ समझते ही नहीं।

पर जिनके पास ज्ञान का रत्न है, वे अपनी मस्ती में मस्त रहते हैं। और कबीर कहते हैं :

हीरा पायो गाँठ गँठियायो।
बार-बार वाको क्यों खोले ?
जब मस्त हुआ तब क्यों बोले ?

काज़ी जी ने सोचा कि बादशाह के पास चलूँ। सुना है बड़े पारखी हैं। अगर सिक्का जम गया तो ज़िन्दगी सँवर जाएगी।

जब वे दरबार में पहुँचे तो सारे दरबारियों पर उनका रोब छा गया।

बादशाह ने उन्हें सम्मान के साथ अपने पास बिठाया। काज़ी जी की बातों का बादशाह पर बहुत असर हुआ और काज़ी जी को अपने दरबारियों में शामिल कर लिया।

सब जानते हैं कि सब पढ़े-लिखों में एक भारी अवगुण होता है। वे किसी दूसरे पढ़े-लिखे का आदर होता देखते हैं तो मारे डाह के जल-भुन जाते हैं। यह पुरानी रीति है।

इस दरबार में एक दूसरे काज़ी भी थे। दूसरे काज़ी का सम्मान होते देखकर उन्हें लगा कि गए काम से ! इस तरह तो किसी दिन बादशाह उनकी बात भी नहीं पूछेगा।

उन्होंने सोचा कि कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे नए काज़ी की किरकिरी हो।

एक दिन मौका पाकर उन्होंने बादशाह के कान भरने शुरू किये—"जहाँपनाह ! इस नए आदमी को आपने बिना जाँचे-परखे ही रख लिया। राजनीति ऐसा करने की मनाही करती है। क्या मालूम पड़ोसी बादशाह का जासूस हो ! बातें तो बहुत बनाता है, परीक्षा लें तो मालूम हो कि कितने पानी में है।" और फिर लगे हाथ, बादशाह के बिना पूछे तीन सवाल भी बता दिये कि ये सवाल पूछिये, पता चल जाएगा।

बादशाह ने सवाल सुने तो उसे लगा कि सचमुच ये सवाल हैं ज़ोरदार। इनके जवाब देना कोई बच्चों का खेल नहीं है।

दूसरे दिन जब दरबार लगा तो बादशाह ने नए काज़ी से कहा, "काज़ी जी ! मेरे मन में खुदा के बारे में कुछ जानने की इच्छा है। मैं समझता हूँ कि आप मेरी इस जानने की इच्छा को अपने उचित उत्तरों से शान्त करेंगे। पहली बात मैं यह जानना चाहता हूँ कि खुदा कहाँ रहता है ?

दूसरी बात मैं यह जानना चाहता हूँ कि खुदा देखता किस ओर है ? और तीसरी बात यह कि खुदा करता क्या है ? मेहरबानी करके ऐसे उपयुक्त और

समाधान करने वाले उत्तर दीजिए कि मैं निहाल हो जाऊँ।"

आज तक ये नए काज़ी जी चिकनी-चुपड़ी बातें कहकर बादशाह को प्रसन्न करते रहे थे। आज यह नई मुसीबत सामने आई तो पैरों के नीचे से ज़मीन सरक गई। फिर भी अपने मन की घबराहट को छिपाकर बोले, "जहाँपनाह ! जवाब देने के लिए एक सप्ताह का समय चाहिए।"

बादशाह ने उनकी बात मान ली।

ये काज़ी महोदय छः दिन तक खूब माथा-पच्ची करते रहे। कभी यह किताब खोलते और कभी वह। पर उन्हें इन सवालों के बने-बनाए स्पष्ट उत्तर नहीं मिले। उनकी यह परेशानी उनके नौकर पाज़ी से छिपी नहीं रही।

उसने काज़ी से पूछा कि वह परेशान क्यों हैं ? मेरे योग्य कोई सेवा हो तो बताएँ।

काज़ी ने उसे झिड़क दिया। बोले, "भाग यहाँ से ! मुझे तंग मत कर ! अब मेरी मौत का दिन दूर नहीं है।"

पाज़ी दिल से चाहता था कि मालिक का दुःख दूर हो। उसने फिर प्रार्थना की। बोला, "मालिक, अगर मैं अपनी जान देकर भी आपको बचा सका तो

बचाऊँगा। आप एक बार मुझे बताइये तो सही कि बात क्या है ?"

काज़ी ने लम्बी साँस लेकर कहा, "वह बात तेरे बस की नहीं है। तू जा, अपना काम कर।"

पाज़ी समझ गया कि मामला टेढ़ा है, और यह भी कि मालिक मुझे इस योग्य नहीं समझते कि दिल की बात मुझे बताएँ। वह चाहता था कि इस आड़े वक्त पर किसी काम आए। उसने कहा, "जब तक आप मुझे नहीं बताएँगे कि क्या बात है, तब तक मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा।"

काज़ी ने सोचा कि यह पाज़ी बिना पूछे नहीं मानेगा। इसलिए बादशाह के पूछे हुए तीनों सवाल उसे कह सुनाए।

सवाल सुनकर पाज़ी बोला, "मालिक, आप चिन्ता मत कीजिए। इन सवालों के जवाब काज़ी के बदले पाज़ी देगा। आप तो बस इतना कीजिये कि बादशाह से कह दीजिएगा कि आपके सवालों के जवाब मेरा नौकर देगा। बाकी मैं सारी बात संभाल लूँगा।"

काज़ी ने हैरानी से कहा, "तू कह क्या रहा है ? लगता है, तेरा दिमाग आज ठिकाने नहीं है। तू इन सवालों के जवाब देगा ? तू क्या जाने खुदा की बातें और शाही दरबार के तौर-तरीके ? बादशाहों का

स्वभाव विचित्र होता है। ज़रा-सी बात पर बिगड़ जाएँ तो सिर कलम कर दें। मैं छः दिन से लगातार किताबों के पन्ने पलट रहा हूँ कि कोई ठीक-सा जवाब मिल जाए, पर सफलता नहीं मिली। अबे ! तू किस बल-बूते पर जवाब देने को कह रहा है ?"

पाज़ी बोला, "मालिक, जब आप बादशाह को जवाब नहीं देंगे तो सज़ा आपको मिलेगी। मैं ठीक जवाब नहीं दे पाऊँगा तो सज़ा मुझे मिलेगी। और अगर मेरे जवाबों से बादशाह खुश हो गया तो वाह-वाही आपकी होगी। लोग कहेंगे कि काज़ी साहब का नौकर ही इतना समझदार है तो वह खुद तो पता नहीं कितने विद्वान् हैं !"

मरता क्या न करता ! आखिर काज़ी ने पाज़ी की बात मान ली। पाज़ी को साथ लेकर काज़ी दरबार में पहुँचा।

जब दरबार शुरू हुआ तो बादशाह ने काज़ी को याद दिलाई कि वह आज सवालों के जवाब दे।

काज़ी बोला, "बादशाह सलामत ! आपके सवालों के जवाब मेरा यह नौकर पाज़ी देगा।"

बादशाह ने पाज़ी को कहा कि वह आगे आए और जवाब दे।

सभी दरबारी बड़ी उत्सुकता से पाज़ी की ओर

देखने लगे ।

पाज़ी पूरे आत्म-विश्वास के साथ आगे बढ़ा और बोला, "मैं आपके सवालों के जवाब देने के लिए पूरी तरह तैयार हूँ । पर बात यह है कि सवाल पूछनेवाले से, जवाब देनेवाले का दर्जा बड़ा होता है । इसलिए मुझे शाही तख्त पर बिठाइये और आप उससे कुछ कम ऊँची जगह पर बैठिये ।"

पाज़ी की बात सुनकर सारे दरबारी दंग रह गए । वे मन-ही-मन उसकी हिम्मत की सराहना करने लगे ।

बादशाह को लगा कि यह बात ठीक ही कह रहा है । उसने पाज़ी को शाही तख्त पर बैठने को कहा और स्वयं वहाँ से उठकर कुछ नीचे बैठा ।

तब पाज़ी बोला, "अब आप अपने सवाल पूछ सकते हैं ।"

बादशाह ने पहला सवाल पूछा, "भगवान् रहता कहाँ है ?"

पाज़ी ने कहा कि दूध देने वाली एक गाय मँगवाइये ।

नौकर झट एक गाय ले आए ।

तब पाज़ी ने पूछा, "गाय के जिस्म के किस हिस्से में दूध है ?"

बादशाह ने कहा, "थनों में ।"

पाज़ी बोला, "थनों से दूध निकलता है और थनों के पास इकट्ठा होता है, इतना सच है। पर दूध केवल थनों में है, यह बात ठीक नहीं है। दूध गाय के सारे शरीर में है।"

बादशाह ने इस पर अपनी सहमति प्रकट की तो गाय वापस भिजवा दी गई।

फिर पाज़ी ने लोटा-भर दूध लाने के लिए कहा। नौकर दूध ले आए।

पाज़ी ने पूछा, "दूध में मक्खन कहाँ है ?"

"सारे दूध में मक्खन है।" बादशाह ने कहा।

"बिल्कुल ठीक !" पाज़ी बोला, "जैसे मक्खन दूध की हर बूँद में है, वैसे ही भगवान् भी हर प्राणी में है। जैसे दूध में से मक्खन निकालने के लिए कुछ क्रिया करनी पड़ती है, वैसे ही सब में बसे भगवान् को प्रकट करने या पाने के लिए भी कुछ परिश्रम करना पड़ता है। संत-महात्माओं द्वारा बताए गए उपायों को करना पड़ता है।"

अब पाज़ी ने बादशाह से पूछा, "क्या आपको अपने पहले सवाल का जवाब मिल गया ?"

बादशाह के 'हाँ' करने पर पाज़ी ने दूसरा सवाल पूछने के लिए कहा।

बादशाह ने दूसरा सवाल पूछा, "भगवान् देखता

किस ओर है ?"

पाज़ी बोला, "एक दीपक मँगवाइए।"

तुरन्त एक जगा दीपक लाया गया।

पाजी ने पूछा, "इसका प्रकाश किस दिशा की ओर है ?"

बादशाह ने कहा, "चारों ओर।"

"ठीक इसी तरह ईश्वर भी सब ओर देखता है।" पाज़ी ने उत्तर दिया, "ईश्वर सबके हृदय में ज्योति के समान विराजमान है। उसके प्रकाश से सब-कुछ दिखता है।"

बादशाह ने तीसरा सवाल पूछा, "भगवान् करता क्या है ?"

पाज़ी ने कहा, "क्षण-भर में इसका भी जवाब दिये देता हूँ। अभी किसी को भेजकर काज़ी जी को बुला दीजिए।"

जब काज़ी को बादशाह का बुलावा मिला तो मारे डर के होश गुम हो गए। काज़ी घबराहट में दरबार में पहुँचा तो देखता क्या है कि उसका नौकर पाज़ी शाही तख्त पर बैठा हुआ है। यह देख उसे बड़ी हैरानी हुई।

पाज़ी ने अपने मालिक काज़ी को उस जगह बैठने को कहा जहाँ पहले वह खुद बैठा था। फिर बादशाह

को कहा कि आप उस जगह बैठ जाइए, जहाँ पहले काज़ी जी बैठते थे।

जब काज़ी और बादशाह उसके कहे अनुसार बैठ गए तो उसने बादशाह को समझाते हुए कहा, "देखिये बाहशाह सलामत ! ईश्वर ने इस संसार में किसी को भी स्थिर नहीं बनाया है। वह प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति को बदलता रहता है। अब आप यहीं पर देख लीजिए न ! उसने पाज़ी को बादशाह के तख्त पर बिठा दिया, बादशाह को काज़ी की जगह और काज़ी को पाज़ी की जगह।"

सारे दरबारी, बादशाह और स्वयं काज़ी भी उस पाज़ी की इस बात पर हँस पड़े।

बादशाह उसके जवाबों और समझदारी से बहुत प्रसन्न हुआ। फिर उसे बहुत-सा इनाम देकर विदा किया।

*

मोर्चा फतह

जर्मन का बादशाह फ्रेडरिक दि ग्रेट फ्रांस के साथ लड़ रहा था। उसकी सेना खूब बहादुरी से लड़ी, पर

शत्रु की सेना ज्यादा थी, इसलिए हार गई।

फ्रेडरिक के बहुत-से सैनिक मारे गए; बहुत-से घायल हो गए। बहुतों को बन्दी बना लिया गया। उसके किले पर भी फ्रांस वालों का अधिकार हो गया।

फ्रेडरिक हार ज़रूर गया था, पर उसने हिम्मत नहीं हारी थी। और अगर आदमी हिम्मत से काम ले तो पासा पलट सकता है, हार को जीत में बदल सकता है।

फ्रेडरिक ने अपने थोड़े-से बचे हुए सैनिकों को इकट्ठा किया और शत्रु से किला वापस लेने की एक योजना बनाई।

उसने अपने सैनिकों की पाँच टुकड़ियाँ बनाईं। चार टुकड़ियाँ किले के चारों ओर कुछ दूरी पर तैनात कर दीं और पाँचवीं टुकड़ी अपने साथ रखी। चारों टुकड़ियों के आगे जीत का बाजा बजाने वाले तैनात किये और उन्हें कहा कि ज्योंही मैं किले में घुसूँ, चारों दिशाओं से बाजे बजाते हुए किले की ओर बढ़ते चले आना।

फ्रेडरिक स्वयं अपनी टुकड़ी के साथ बिना हथियार लिये किले में चला गया और एक ऊँची जगह खड़ा होकर जोर से चिल्लाने लगा, "अगर अपनी-अपनी जान की खैर चाहते हो तो अपने हथियार डाल दो

और किले से बाहर निकल जाओ ! तुम चारों ओर से आ रही मेरी सेना से घिर गए हो। तुम्हारा भला इसी में है कि यहाँ से चुपचाप खिसक जाओ !"

चारों ओर से फ्रेडरिक की चारों टुकड़ियाँ जीत का बाजा बजाती किले की ओर आ रही थीं। किले के चारों ओर बजनेवाले बाजों का शोर फ्रांस के सैनिकों को सुनाई दे रहा था। फ्रेडरिक का साहस के साथ, किले में प्रवेश भी उन्होंने देखा था। उन्होंने घबराकर हथियार डाल दिये और भाग खड़े हुए।

इस तरह फ्रेडरिक की बिना युद्ध किये ही विजय हो गई।

*

मन के जीते जीत

महाराजा रणजीतसिंह ने पंजाब में अपना राज्य स्थापित किया था। उनकी शूरवीरता का लोहा सभी मानते थे।

एक बार वे सेना लेकर अटक नदी के तट पर पहुँचे। उन्हें नदी पार करनी थी, पर नदी पर कोई पुल नहीं था। पानी का वेग तेज था, इसलिए सेना को

पानी में कूदते डर लग रहा था।

महाराजा रणजीतसिंह साहस के धनी थे। उन्होंने सोचा कि सेना का मनोबल बढ़ाना चाहिये। मनोबल होगा तो शरीर में भी बल आ जाएगा। लड़ाई हथियारों से उतनी नहीं लड़ी जाती जितनी आत्मबल से।

उन्होंने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया और तलवार को आसमान में ऊँचा उठाकर जोर से कहा—

सबै भूमि गोपाल की, या में अटक कहाँ।
जाके मन में अटक है, सो ही अटक रहा॥

और अपना घोड़ा नदी में बढ़ा दिया।

फिर क्या था! उनके पीछे-पीछे सारी सेना नदी में उतर पड़ी।

महाराजा रणजीतसिंह ने अपने घोड़े को नदी में उतारकर साहस और उत्साह की ऐसी लहर पैदा कर दी जिसके सामने नदी का प्रवाह फीका पड़ गया।

नदी-पार डेरा डाले शत्रु की सेना ने जब देखा कि प्राणों की परवाह किये बगैर महाराजा रणजीतसिंह की सेना नदी के प्रवाह को रौंदती हुई बढ़ी चली आ रही है तो उनके छक्के छूट गए। वे मैदान से भाग खड़े हुए।

*

देश के नाम पर धब्बा

जापान में एक भारतीय छात्र शिक्षा प्राप्त करने गया था। वह वहाँ इंजिनीयरिंग का अध्ययन कर रहा था।

वह विश्वविद्यालय के पुस्तकालय से पढ़ने के लिए पुस्तकें ले आता।

एक बार वह इंजिनीयरिंग की कोई पुस्तक पुस्तकालय से लाया।

उसमें से अपने काम की बातों का सार-संक्षेप उसने अपनी कापी में लिख लिया। किन्तु इंजिनीयरी में मशीनों के नक्शे (डायग्राम) बड़े जरूरी होते हैं। उनके बिना काम नहीं चलता, बात समझ में नहीं आती।

इन नक्शों की नकल करना आसान काम नहीं होता। उन दिनों फोटोस्टेट जैसी सुविधाएँ नहीं थीं, जिनसे झट नकल तैयार हो जाए।

उस छात्र ने चोरी करने का निश्चय किया। उसने वे नक्शे पुस्तक में से फाड़ लिये। उसने समझा कि मेरी चोरी का किसी को पता नहीं चलेगा। उसने यह भी नहीं सोचा कि मेरे इस काम से और कितने लोगों को परेशानी होगी।

हर चोर यही समझता है कि वह पकड़ा नहीं जाएगा, पर प्रायः चोर पकड़े जाते हैं।

जब वह पुस्तक लौटाने गया तो पुस्तकालय के कर्मचारी ने पुस्तक रख ली। किसी को पता नहीं चला। यह छात्र अपनी चतुराई पर बहुत प्रसन्न था कि मेरी चोरी का किसी को पता नहीं लगा।

कुछ दिनों बाद की बात है—उसका सहपाठी एक जापानी छात्र उसके कमरे में आया। उसने भारतीय छात्र के मेज पर वे फाड़े हुए नक्शे रखे देखे।

उसने इसकी सूचना अधिकारियों को दे दी। तब से पुस्तकालय में नियम बन गया कि भारतीय छात्रों को पुस्तकें न दी जाएँ।

एक व्यक्ति के स्वार्थ के कारण वहाँ पढ़ने वाले अन्य भारतीय छात्रों को तो अपमानित होना ही पड़ा, देश का भी अपमान हुआ।

*

दयालु अब्राहम लिंकन

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन मानवता के पुजारी थे। अमेरिका में दास-प्रथा को

समाप्त करने का काम उन्हीं ने किया था। वह अत्यन्त लोकप्रिय राष्ट्रपति थे।

एक दिन वे राष्ट्रपति-भवन से कहीं जा रहे थे। उन्होंने मार्ग में देखा कि एक सूअर कीचड़ में धँसकर अधमरा हो रहा है। वह सूअर कीचड़ के उस गड्ढे से निकलने का बार-बार प्रयत्न कर रहा था, पर निकल नहीं पा रहा था। थकान और भूख से वह निढाल हो चुका था और उसकी जान पर बन आई थी। वह बुरी तरह चीख रहा था, जैसे सहायता के लिए किसी को पुकार रहा हो।

राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के कानों में उसकी चीख-पुकार पड़ी। उन्होंने सवारी रोक दी और आस-पास देखने लगे। उन्हें गड्ढे से बाहर निकलने के लिए छटपटाता सूअर दिखाई दिया। वे सवारी से नीचे उतर पड़े। उनका दयालु हृदय उस सूअर को फँसा देखकर पिघल पड़ा। उन्होंने उसे सहारा देकर बाहर निकाला।

सूअर तो कीचड़ में ही फँसा हुआ था। उसकी छटपटाहट के कारण राष्ट्रपति के सारे कपड़े कीचड़ के छींटों से खराब हो गए। पर उस महामना ने इसकी रत्तीभर परवाह न की और उसी तरह काम पर चले गए।

लोगों के पूछने पर कि कीचड़ के छींटे कैसे पड़े, उन्होंने सारी घटना कह सुनाई।

सुनने वाले राष्ट्रपति की दयालुता और जीवदया की प्रशंसा करने लगे।

प्रशंसा करने वालों को चुप कराते हुए श्री अब्राहम लिंकन बोले, "इसमें प्रशंसा करने जैसी कोई बात ही नहीं है। दया-वया भी कुछ नहीं है। छूत की बीमारी की तरह उस सूअर के दुःख ने मेरे मन में पीड़ा पैदा की, इसलिए मैं अपना ही दुःख दूर करने के लिए उसे गड्ढे में से निकालने लगा।"

दूसरे के दुःख को अपना दुःख समझने का कैसा अनूठा उदाहरण है!

*

देश की आन पर

जापान और रूस में लड़ाई छिड़ी हुई थी। रूस का जंगी बेड़ा जापान की ओर बढ़ रहा था। जापान की सुरक्षा को खतरा पैदा हो गया था।

आवश्यकता इस बात की थी कि कुछ जापानी

अपने प्राणों की बलि देकर, इन रूसी जहाज़ों को डुबो दें।

जापान के राजा ने निश्चय किया कि सरकारी आज्ञा द्वारा किसी को प्राणों की बाज़ी लगाने के लिए न कहा जाए। जो अपनी इच्छा से देश की आन पर कुर्बान होना चाहें, वे आगे आएँ।

इस आशय की सरकारी घोषणा कर दी गई कि जो लोग देश के लिए प्राणों की आहुति देने को तैयार हों, वे अपने नाम प्रस्तुत करें।

इस घोषणा के होते ही इतने युवकों ने प्रार्थना-पत्र भेजे कि चुनाव करना कठिन हो गया। प्रार्थना-पत्रों का ढेर लग गया। अब इनमें से थोड़े-से लोगों को कैसे चुना जाए ?

इन प्रार्थना-पत्रों में से कुछ पर खून से हस्ताक्षर किये गए थे। चुनाव करने वालों ने इन प्रार्थना-पत्रों को अलग कर लिया। अब उनका काम आसान हो गया था।

जहाज़ों को डुबाने का काम इन्हें सौंपा गया। इन जहाज़ों के साथ इन्हें स्वयं भी जल में समाधि लेनी थी।

जहाज़ डुबाने वालों में से कुछ के सामने ऐसा अवसर भी आया कि अगर वे चाहते तो अपनी जान

बचा सकते थे।

उनसे जब किसी ने कहा कि आप अपना कर्त्तव्य पूरी तरह पालन कर चुके और अब अपने को बचा सकते हैं। जान-बूझकर मौत के मुँह में जाने से क्या लाभ! तो मौत का मज़ाक उड़ाते हुए एक कप्तान ने कहा, "मैंने वापस जाने के लिए प्रार्थना-पत्र नहीं दिया था।"

मरना भला है उसका, जो अपने लिए जिये।
जीता है वह जो मर चुका इन्सान के लिए॥

*

देश के सम्मान में अपना मान

एक जापानी जहाज़ में, कुछ भारतीय सवार थे। जब भोजन का समय हुआ और भोजन परोसा जाने लगा, तो भारतीयों ने भोजन करने से इन्कार कर दिया। भोजन न करने का कुछ भी कारण हो सकता था—उन्हें भूख न हो, या भोजन उनकी रुचि का न हो। हो सकता है वे शाकाहारी हों और भोजन वैसा न हो।

कोई एक व्यक्ति भोजन न करता तो इस बात की ओर किसी का ध्यान भी न जाता। पर जब सभी

भारतीयों ने भोजन नहीं किया तो साथ यात्रा कर रहे जापानियों को कुछ शंका हुई। उनमें से एक जापानी दूध और फल आदि खरीद लाया और उन भारतीयों को बड़े आदर के साथ देने लगा।

भारतीयों ने पहले तो उन चीज़ों को लेने से इन्कार किया, पर उस जापानी के बार-बार आग्रह करने से स्वीकार कर लिया।

जापानी सज्जन ने बड़े प्रेम और आग्रह से उन्हें वे चीज़ें खिलाईं।

भारतीयों ने भी उसका धन्यवाद किया और उन चीज़ों का मूल्य देने लगे।

जापानी ने मूल्य लेने से इन्कार किया और बड़ी नम्रता से कहा, "आप हमारे मेहमान हैं। आपने किसी कारण भोजन नहीं किया। भोजन का समय था और आप भूखे थे, इसलिए आपका आतिथ्य करना मेरा कर्त्तव्य था। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप अपने देश में जाकर किसी से यह न कहें कि जापान के जहाज़ों में यात्रियों को अच्छा भोजन नहीं दिया जाता।"

यह जापानी सज्जन, जिसका जहाज़ के साथ कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था, इसलिए अपने पैसे से विदेशी यात्रियों का अतिथि-सत्कार कर रहा था कि वे उसके देश के जहाज़ों की भोजन-व्यवस्था को लेकर, उसके

देश की निन्दा न करें।

एक अच्छा नागरिक इसी तरह अपने देश के सम्मान की रक्षा करता है।

*

छाया की माया

एक ऐसा पिंजरा था, जिसमें चारों ओर शीशे लगे हुए थे। उसके तल में बीचों-बीच गुलाब का एक सुन्दर फूल रखा हुआ था।

उस पिंजरे में एक मैना छोड़ दी गई। गुलाब के फूल का प्रतिबिम्ब चारों ओर के शीशों में दिखाई देने लगा। मैना शीशे में प्रतिबिम्ब को देखकर चोंच मारती। उसकी चोंच में चोट लगती और फूल ज्यों का त्यों दिखाई देता। वह चोंच मार-मारकर थक गई, पर फूल अपनी जगह वैसा ही दिखता रहा।

वह जिधर देखती, उधर ही फूल दिखता। चोंच मार-मारकर वह निढाल होकर गिर पड़ी। गिरने पर जब उसकी नज़र नीचे की ओर गई तो फूल मिल गया। यह था असली फूल! अब तक वह जिसे फूल समझ रही थी, वह फूल नहीं, फूल का प्रतिबिंब-मात्र था।

इस दृष्टान्त का अभिप्राय यह है कि संसार ही वह पिंजरा है। जिस सुख को हम बाहर की दुनिया में खोजते फिरते हैं और उसे पाने में अपने को थका लेते हैं, वह सुख मनुष्य के भीतर ही है। ज़रूरत इस बात की है कि भीतर ही खोजा जाए।

संत कबीर ने कहा है :

घट ही खोजो भाई !

*

आत्म-विश्वास

एक विद्यालय के निरीक्षक महोदय विद्यालय का निरीक्षण करने आए। मुख्याध्यापक ने एक छात्र को उनके सामने प्रस्तुत किया और बोले, "यह छात्र बड़ा मेधावी और परिश्रमी है। इसे अनेक कवियों की कविताएँ ज़बानी याद हैं। पाठ्य-पुस्तकों में से तो चाहे कहीं से पूछ लीजिये।"

निरीक्षक महोदय इस प्रतिभाशाली छात्र को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। मुख्याध्यापक जी ने बड़े आग्रह से कहा कि अगर चाहें तो इससे कुछ पूछ लें।

निरीक्षक महोदय ने उससे कविता का एक अंश

सुनाने को कहा ।

वह छात्र अपनी प्रशंसा सुनकर लाज और संकोच में गड़ गया । उसने कहा, "जी नहीं, मुझे कुछ नहीं आता । इन्होंने मेरी वैसे ही बड़ाई कर दी । मैं तो कोई चीज़ नहीं हूँ ।"

नम्रता दिखाने वह मना करता रहा कि मैं कुछ नहीं जानता ।

निरीक्षक ने दोबारा कुछ और पूछा, किन्तु छात्र ने तब भी अपनी पहले वाली नम्रता और संकोच नहीं छोड़ा ।

यह देखकर बेचारे मुख्य शिक्षक महोदय का मुँह उतर गया ।

अब एक दूसरे छात्र की बारी आई । वह आत्म-विश्वास से भरा हुआ था । निरीक्षक महोदय ने जो कुछ पूछा, उसने उसका ठीक-ठीक उत्तर दिया । उसे अपने पढ़े हुए पर विश्वास था ।

आत्म-विश्वास से बड़े-बड़े कार्य सिद्ध हो जाते हैं, और आत्म-विश्वास की कमी हो तो सारे साधन धरे-धराए रह जाते हैं ।

*

अपनी-अपनी करनी

दो भाई थे। एक लखपति था और दूसरा कंगाल। वे आपसी झगड़े को निपटाने जब जज के पास पहुँचे तो उसने उन दोनों को देखकर लखपति से पूछा, "क्या कारण है कि आप धनवान हैं और आपका भाई निर्धन ?"

उसने कहा, "आपका यह पूछना उचित ही है। मैं आपको जो कुछ हुआ है, उसे सुनाता हूँ—

"पाँच वर्ष पूर्व हम दोनों अलग-अलग हुए। दोनों को बराबर-बराबर सम्पत्ति मिली थी। दो-दो लाख रुपया नकद हमारे हिस्से आया था। मेरा यह भाई उस रुपए को पाकर आलसी हो गया। यह कोई काम-धन्धा नहीं करता था। यह नौकरों को आज्ञा देता कि जाओ, यह काम करो, वह काम करो। अपने हाथ से कुछ नहीं करता था। यह उस रुपए को खाने-पीने और सुख-सुविधाएँ जुटाने में खर्च करता रहा।

"रुपया खर्च होता गया और आमदनी एक पैसे की भी नहीं हुई। जमा पूँजी धीरे-धीरे समाप्त हो गई। मालिक को आलसी और लापरवाह देखकर, सारे नौकर-चाकर भी वैसे ही हो गए। परिणाम यह हुआ कि यह कंगाल हो गया।

"मैं अलग होने के बाद दिन-रात मेहनत करने लगा। नौकरों को मैं अपने साथ काम पर लगाता और उन पर पूरी नज़र रखता। वे भी मेरी उपस्थिति में खूब मन लगाकर काम करते। मेरे सारे काम ठीक समय पर होते और ठीक तरीके से होते। मैंने नौकरों से हमेशा यही कहा कि 'आओ काम करें।' यह कभी नहीं कहा कि 'जाओ, काम करो।' पर मेरा यह भाई सदा यही कहता कि 'जाओ, काम करो।' परिणाम यह हुआ कि सम्पत्ति, मित्र और ग्राहक—सभी उससे दूर होते गए। मेरी सम्पत्ति, मित्र और ग्राहक बढ़ते गए।"

□□□